

भारतीय रिज़र्व बैंक जगत में सांख्यिकी *

दुव्वुरि सुब्बाराव

हम यहाँ आज रिज़र्व बैंक के पाँचवें वार्षिक सांख्यिकी दिवस सम्मेलन में स्व.प्रो.पी.सी.महलनवीस, जिन्होंने भारतीय सांख्यिकी प्रणाली में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था, के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उपस्थित हैं। मैं अपनी बात इस उल्लेख से आरंभ करना चाहता हूँ कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने 20 अक्टूबर 2010 को पहला सांख्यिकी दिवस घोषित किया था। सार्वजनिक नीति-निर्माण में सांख्यिकी और सांख्यिकीय विश्लेषण के महत्व को पहचानते हुए हम भारत में दुनिया से आगे निकल गये हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक में सांख्यिकी दिवस

2. मुझे यह नोट करते हुए संतोष हो रहा है, वस्तुतः मैं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ कि रिज़र्व बैंक में सांख्यिकी दिवस का मनाया जाना एक वार्षिक समारोह मनाये जाने से कहीं अधिक है। हम इस तथ्य से अवगत हैं कि हमारे नीति निर्धारण में, चाहे वह मौद्रिक नीति हो, विनियामक कार्य हो या वित्तीय स्थिरता के लिए निर्णय लेना हो, हमारे पास उपलब्ध आँकड़ों की गुणवत्ता और उन आँकड़ों के विश्लेषण और निर्वचन करने की हमारे सामर्थ्य से सुधार आता है। रिज़र्व बैंक में हम जो भी निर्णय लेते हैं उसका गहरा प्रभाव समष्टि-अर्थव्यवस्था पर पड़ता है और इसमें कोई भूल हमारे लिए महँगी हो सकती है। इसलिए हमारा नीति-निर्णय न केवल आँकड़ा-विश्लेषण और निर्वचन के अत्याधुनिक कौशल पर आधारित होना चाहिए, अपितु नितांत निष्कपट मान्यकरण एवं समान समीक्षा की बौद्धिक मूल्यन प्रणाली पर भी आधारित होना चाहिए।

3. बौद्धिक अखंडता के विषय पर मैं प्रो.सुरेश तेंदुलकर के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूँगा जिनका कुछ सप्ताह पहले देहावसान हो गया। आपमें से अनेक लोग यह जानते होंगे कि प्रो.तेंदुलकर रिज़र्व बैंक के केंद्रीय निदेशक मंडल में एक निदेशक थे। वे लब्धप्रतिष्ठ अर्थशास्त्री थे और उन्हें अपने अध्यापन और विद्वत्ता के लिए तथा भारतीय समष्टिआर्थिक मुद्दों पर आधिकारिक टिप्पणी के लिए व्यापक सम्मान मिलता था। प्रो.तेंदुलकर की अनेक क्षमताओं में से एक क्षमता यह थी कि वे आँकड़ा-विश्लेषण के संबंध में जो कुछ भी कहते थे उसकी बुनियाद के प्रति उनकी अविचलित प्रतिबद्धता होती थी। वे जो कुछ भी कहें, आपको उस पर भरोसा करना था क्योंकि आप यह जानते थे कि उनके आँकड़े श्रमसाध्य अनुभवमूलक कार्य पर और तीक्ष्ण बुद्धि

पर आधारित होते थे जिससे आँकड़ों का संबंध वास्तविक विश्व-स्थिति से स्थापित किया जा सकता था। यही वह मूल्यन प्रणाली और निर्णय-क्षमता है जिसका अनुसरण और संवर्धन हमें रिज़र्व बैंक में करना चाहिए।

इस वर्ष का सम्मेलन

4. मैं यह समझता हूँ कि इस वर्ष के सम्मेलन के दो विशेष विषय हैं: (i) कालमान श्रेणी विश्लेषण, और (ii) वित्तीय सांख्यिकी। कालमान श्रेणी विश्लेषण अंतर्निहित प्रवृत्ति को समझने के लिए और स्पांतरण बिन्दु की पहचान के लिए महत्वपूर्ण होता है। कालमान श्रेणी का निर्वचन करते हुए हमें अपने विवेक का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है कि क्या आने वाला समय बीते हुए समय से भिन्न होगा और यदि ऐसा हुआ तो वह किस प्रकार का होगा। दूसरे शब्दों में, हमें यह कहने में समर्थ होना चाहिए कि अंतर्निहित प्रवृत्ति अरैखिक हो गयी है। सम्मेलन का दूसरा विषय, वित्तीय सांख्यिकी हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। वस्तुतः इसका महत्व द्रुत वैश्वीकरण की स्थिति में और बढ़ गया है। वैश्वीकृत जगत में वित्तीय प्रणालियाँ अपने क्षेत्र और सभी क्षेत्रों के साथ अंतर्संबद्ध होती हैं। वित्तीय सांख्यिकी का विश्लेषण और निर्वचन करते समय हमें इन अंतर्संबंधों को ध्यान में रखना चाहिए।

5. हमारे बीच आज दो प्रख्यात अतिथि-वक्ता उपस्थित हैं - प्रो.शास्त्री जी.पैटुला जो यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलिना, अमेरिका से हैं और प्रो.राजीव करंदीकर जो चेन्नै मैथेमेटिकल इंस्टीट्यूट के निदेशक हैं - ये दोनों सांख्यिकीविद् अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर हैं। ये सांख्यिकी की दो महत्वपूर्ण शाखाओं : कालमान श्रेणी विश्लेषण और वित्तीय सांख्यिकी में अपार बौद्धिक विदग्धता, समझदारी और सुविज्ञता लेकर आते हैं। हम सब की ओर से मैं इन दोनों का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

वैश्विक संकट और सांख्यिकीय विश्लेषण

6. अब मैं ब्यौरों में जाने के पहले विस्तृत फलक पर एक दूसरी टिप्पणी करना चाहता हूँ। जैसे-जैसे हम वैश्विक संकट से उबर रहे हैं, जो हमारे समय का गहनतम वित्तीय संकट रहा है, हमें अनेक सबक मिले हैं। सबसे बड़े सबकों में से एक यह है कि वास्तविक जगत नियतिवादी नहीं होता बल्कि वह संभाव्यताओं पर विश्वास करता है। यह स्वयंसिद्धि हमारे विश्लेषण और नीति-निर्णयन से ओझल नहीं रहनी चाहिए।

* आरबीआई के सांख्यिकी दिवस सम्मेलन के अवसर पर मुम्बई में 5 जुलाई 2011 को डॉ.दुव्वुरि सुब्बाराव, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक का उद्घाटन भाषण।

7. मैं अपने कथन को भौतिकी के एक सादृश्य से स्पष्ट करना चाहूँगा। न्यूटन के विश्व-बोध के अनुसार हमारा ब्रह्मांड यंत्रवत् है। हमारे लिए जिन बातों को जानना आवश्यक है उनमें भौतिकी के मूलभूत सिद्धांत और आरंभिक स्थितियाँ हैं और हम ब्रह्मांड की उत्पत्ति के बारे में भविष्य में सब समय और किसी भी समय परम परिशुद्धता से निश्चित कर सकते हैं। न्यूटन की भौतिकी के लिए एक ईश्वर का अस्तित्व अपेक्षित होता है लेकिन एक ऐसा ईश्वर जो घड़ीसाज से अधिक कुछ भी नहीं होता।

8. अपनी पशुदृष्टि वाली समझदारी के साथ अब हम यह जान चुके हैं कि अर्थशास्त्रियों ने जो भूल की वह यह थी कि उन्होंने न्यूटन के सिद्धांतों को, जो यंत्रों पर लागू होते हैं, वास्तविक जगत में लागू किया था जिसमें स्वेच्छाचारी मानवों का निवास होता है। निर्धारक अपचयवाद के अनु रूप, जो न्यूटन के यंत्रविज्ञान का पारिभाषिक लक्षण था, अर्थशास्त्रियों ने स्वयं को भ्रम में रखते हुए यह सोचा कि अर्थशास्त्र के नियमों को लघुकृत करके उन्हें यथार्थ एवं निर्धारक गणितीय समीकरणों में प्रस्तुत किया जा सकता है। काश, हम बेहतर जानते होते! इसने हमें विनाशकारी संकट में डाला और हम समझ गये कि हमसे बहुत बड़ी भूल हुई है। अर्थव्यवस्था किस प्रकार विकसित होती है, समष्टि और व्यष्टि, दोनों स्तरों पर, इसका निश्चय मानवीय व्यवहार द्वारा किया जाता है जिसे विरलतम रूप से विश्लेषणात्मक गणितीय समीकरण में ढाला जा सकता है। सब-प्राइम संकट और वित्तीय इंजीनियरिंग, जिसके चलते यह हुआ, इस तथ्य के प्रबल उदाहरण हैं कि यह मानवीय व्यवहार ही है जो वित्त और अर्थशास्त्र की नियति को तय करता है।

9. इस अर्थ में, इस संकट ने वास्तविक जगत के निर्वचन में अनुभवमूलक विश्लेषण के महत्व को प्रबल किया। वास्तविक जगत में निवास करने वाले लोग विभिन्न स्थितियों में अबोधगम्य, अननुमेय एवं स्वेच्छाचारी ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं और उस वास्तविक जगत के समाजशास्त्र और मनोविज्ञान की समझ, जैसे-जैसे यह आर्थिक प्रवृत्तियों में रूपांतरित होती है, विश्वसनीय एवं संगत आँकड़ों के संग्रह तथा उन आँकड़ों के विश्लेषण एवं निर्वचन करने के माध्यम से ही होती है। इसलिए, हमारे नीति-निर्माण के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण को एक उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण समर्थक प्रणाली होना है।

भारतीय रिज़र्व बैंक के नीति-निर्माण में सांख्यिकी

10. अब मैं इस विस्तृत फलक से रिज़र्व बैंक की ओर आता हूँ। यह कहना अनावश्यक है कि सांख्यिकीय विश्लेषण रिज़र्व बैंक के नीति-निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में हम अनेक चुनौतियों और दुविधाओं का सामना करते हैं। इनमें से अधिक महत्व वाले विषय की ओर मैं निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा :

(i) आँकड़ों की गुणवत्ता; (ii) आँकड़ों का परिशोधन; (iii) आँकड़ा-निर्वचन; और (iv) आँकड़ा-अंतराल।

आँकड़ों की गुणवत्ता

11. प्रारंभ में, मैं यह कहना चाहता हूँ कि भारत में सांख्यिकी की समृद्ध परंपरा रही है। इसके आकार, विविधता और फिर भी साक्षरता के न्यून स्तर को देखते हुए हमारी सार्वजनिक सांख्यिकी एजेंसियों की प्रशंसा करनी होगी। निश्चय ही, कुछ मूलभूत सांख्यिकी, उदाहरण के लिए निर्धनता अनुपात, अत्यधिक विवादास्पद होती है। निर्धनता-अनुपात के प्राक्कलन के लिए प्रयुक्त कार्यप्रणाली और प्रयुक्त आँकड़ों की गुणवत्ता - दोनों पर ही अक्सर सवाल उठाये जाते रहे हैं। वास्तव में, मैं इसे सकारात्मक संकेत के रूप में देखता हूँ। मैं इसे बौद्धिक प्रहरी-कार्य के संकेत के रूप में देखता हूँ जो हमारी सांख्यिकी परंपरा में निहित है। तथापि, किसी सार्वजनिक एजेंसी द्वारा जो भी आँकड़े प्रकाशित किये जाते हैं उन्हें चर्चायोग्य होना ही चाहिए।

12. यह कहने के बाद, रिज़र्व बैंक में कुछ मूलभूत आँकड़ों की विश्वसनीयता के बारे में, जिनका प्रयोग करने की आवश्यकता नीति-परिकल्पनों में होती है, हम असुविधा महसूस करते हैं। विशेष रूप से बेरोजगारी और मजदूरी के संबंध में जो आँकड़े हमें प्राप्त होते हैं उनमें भरोसे की गुणवत्ता नहीं होती है। हाल ही में बेरोजगारी के संबंध में जो आँकड़े प्रकाशित किये गये हैं वे विरोधाभासी हैं क्योंकि वे वर्ष 2010 तक की पाँच वर्ष की अवधि में कम रोजगार का सृजन किया जाना और दीर्घकालीन बेरोजगारी दर में गिरावट को साथ-साथ दिखाते हैं। मजदूरी से संबंधित सांख्यिकी के मुद्दे पर असंगठित क्षेत्र की मजदूरी पर उर्ध्वमुखी दबाव इस दृष्टि से असंगत प्रतीत होता है कि अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी और अल्प रोजगार की उच्च दर विद्यमान है।

13. औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) एक अन्य सांख्यिकी है जिसने सहज बोध के विपरीत प्रवृत्ति दर्शायी है। दिसंबर 2008 से जून 2009 तक की अवधि में, जब वैश्विक वित्तीय संकट शिखर पर था, आइआइपी वृद्धि उस समय उपलब्ध आइआइपी शृंखला के अनुसार धनात्मक थी। यह इस संकट के चलते कुछ मंदी की अंतर्निहित प्रवृत्ति के हमारे मूल्यांकन के विपरीत था। नयी आइआइपी शृंखला, जिसका परिशोधन 2004-05 को आधार मानते हुए किया गया, अब यह दर्शाती है कि आइआइपी वृद्धि उस अवधि में वस्तुतः ऋणात्मक थी जिससे हमारा सहजबोध सच साबित होता है। पुनः, पुरानी आइआइपी शृंखला ने यह दिखाया था कि पिछले वर्ष (2010-11) की दूसरी छमाही में औद्योगिक कार्यकलाप पहली छमाही की तुलना में धीमा हुआ लेकिन संशोधित आइआइपी शृंखला दर्शाती है कि औद्योगिक वृद्धि ने राजकोषीय वर्ष की दोनों छमाहियों में मोटे तौर पर समान गति बनाये रखी।

14. आइआइपी की दूसरी समस्या इसका अस्थिर होना है जिसमें पूँजीगत वस्तुओं के क्षेत्र में अस्थिरता और अधिक होती है। विश्लेषणात्मक रूप से यह विस्मयजनक है। नयी शृंखला में भी अस्थिरता बनी हुई है। नीतिगत प्रयोजनों के लिए यह निर्धारित करना महत्वपूर्ण है कि क्या ऐसे व्यवहार का मूल कारण अनिश्चितता के परिणामस्वरूप उत्पादन संबंधी निर्णय लेना होता है अथवा क्या यह संकलन की प्रक्रिया के चलते होता है। इसके लिए अनेक स्पष्टीकरण दिये गये हैं जिनमें यह शामिल है कि आइआइपी में महीने में विनिर्मित उत्पाद शामिल होते हैं न कि उत्पादनाधीन उत्पाद। अतः, ऐसी मंद, खासकर जिनका एक महीने से अधिक का विनिर्माण चक्र होता है, माह-दर-माह वृद्धि / हास का कारण बनती हैं जो आवश्यक रूप से अर्थव्यवस्था में अंतर्निहित माँग के साथ संगति नहीं रखती है।

15. उपर्युक्त निदर्शनों से यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार घटिया गुणवत्ता वाले आँकड़े संभाव्य रूप से नीतिगत परिकल्पनों को भ्रमित करते हैं।

आँकड़ा परिशोधन

16. रिज़र्व बैंक का नीति-निर्माण आँकड़ों में बहुधा परिशोधन किये जाने से भी बाधित होता है। हम निर्धारित समय पर नीतियाँ बनाते हैं और यदि अनंतिम आँकड़े जिनके आधार पर नीति बनायी जाती है, सही न हों तो परिणामी नीतियाँ अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकतीं। इस संबंध में जीडीपी वृद्धि का उदाहरण लिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, वर्ष 2009-10 के लिए व्यय के पक्ष में बाजार की कीमतों पर जीडीपी वृद्धि दर, जो फरवरी 2010 में प्रकाशित हुई, 6.8 प्रतिशत थी। इसे बदल कर मई 2010 के संशोधित अनुमान में 7.7 प्रतिशत किया गया और पुनः फरवरी 2011 में त्वरित अनुमान में 9.1 प्रतिशत किया गया। अतः नीति में जीडीपी के अग्रिम अनुमान के संबंध में जिस जानकारी का मजबूरन उपयोग करना पड़ा था वह वृद्धि की गति को कमतर आँकड़े की जोखिम से भरा हुआ था।

17. थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआइ) मुद्रास्फीति के संबंध में अधिक महत्वपूर्ण आँकड़े में भी बहुत बड़ा संशोधन किया गया। उदाहरण के लिए, डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति का आरंभिक अनुमान जनवरी 2011 के लिए 8.2 प्रतिशत और फरवरी 2011 के लिए 8.3 प्रतिशत लगाया गया था। इन दोनों संख्याओं को काफी हद तक उर्ध्वमुखी रूप से प्रत्येक के लिए 120 आधार अंक तक संशोधित किया गया। अक्सर यह स्पष्ट नहीं होता है कि ये संशोधन एकल कारक या प्रणालीगत कारकों के चलते किये जाते हैं। फिर भी, हरेक बार जब हम मुद्रास्फीति की स्थिति का मूल्यांकन करते हैं, तब हमें दुहरा अंदाजा लगाना होता है कि किस प्रकार इस अनंतिम संख्या को संशोधित किया जा सकता है।

18. मैं सोचता हूँ कि यह ग्राउचो मार्स थे जिन्होंने कहा था 'कभी भी पूर्वानुमान नहीं लगायें; विशेष रूप से भविष्य के बारे में'। इस संबंध में रिज़र्व बैंक के पास विकल्प-प्रयोग की स्वतंत्रता नहीं है। पणधारियों के लिए नीतिगत मार्गदर्शन के विषय के रूप में हमें मुद्रास्फीति के संबंध में अपना पूर्वानुमान प्रस्तुत करना होता है। स्पष्ट रूप से ऐसा पूर्वानुमान उस समय उपलब्ध आँकड़ों पर आधारित होता है। लेकिन जो आँकड़े हम अर्थमितीय प्रतिरूप (इकोनॉमिक मॉडल) में निविष्ट करते हैं वे यदि लोक से हट कर होते हैं और किसी सुव्यवस्थित पैटर्न का प्रदर्शन नहीं करते हैं तो मुद्रास्फीति के लिए हमारे पूर्वानुमान भी लोक से हट जाते हैं।

19. रिज़र्व बैंक के मुद्रास्फीति से संबंधित पूर्वानुमानों में वर्ष 2010-11 के दौरान अंत-वर्ष मुद्रास्फीति को सुनियोजित रूप से कम बताया गया था। मुद्रास्फीति को कम बताये जाने के लिए अनेक कारक जिम्मेवार थे : (i) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल और अन्य पण्यों की कीमतों में अनुमान से अधिक वृद्धि होना; (ii) मानसून के सामान्य रहने पर भी खाद्यान्न की कीमतों में अनुमान से कम गिरावट, जिसने बदले में खाद्यान्न के उपभोग में संरचनात्मक बदलाव को प्रतिबिंबित किया और प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ की माँग को बढ़ा दिया; (iii) उस समय उपलब्ध आइआइपी आँकड़ों से गलत संकेत मिलना, जिसने वर्ष 2010-11 की दूसरी छमाही में वृद्धि में नरमी की ओर और माँग-जन्य दबाव की ओर इशारा किया, जबकि इस समय उपलब्ध संशोधित आइआइपी शृंखला वृद्धि तथा माँग में ऐसी कोई गिरावट नहीं दर्शाती है; और (iv) मुद्रास्फीति के पिछले आँकड़ों में सामान्य से अधिक उर्ध्वमुखी संशोधन किया जाना। इस संदर्भ में वर्ष 2010-11 के दौरान मुद्रास्फीति का निरंतर उच्च स्तर पर रहना और वर्ष 2011-12 की पहली छमाही में इस प्रकार की प्रवृत्ति का बना रहना इस ओर इशारा करता है कि हम अर्थव्यवस्था की संभावित वृद्धि दर के लिए अपने अनुमानों की पुनः समीक्षा करें।

20. यह स्वीकार करना होगा कि वास्तविक जगत में निर्धारित सांख्यिकी में आँकड़ा-संशोधन अपरिहार्य होता है लेकिन हमें सजग प्रयास करना होगा कि इस संशोधन की प्रमात्रा और संख्या को कम करें ताकि नीतिगत विकल्पों को अधिक बेहतर और कारगर बनाया जा सके।

मुद्रास्फीति संबंधी आँकड़ों का निर्वचन

21. यह मेरे लिए संभवतः उपयुक्त संदर्भ होगा कि मैं रिज़र्व बैंक द्वारा मुद्रास्फीति से संबंधित आँकड़ों के उपयोग और विश्लेषण के विरुद्ध कुछ आलोचनाओं पर ध्यान दूँ। सभी व्यौरों और सूक्ष्म भेदों का सार ग्रहण करते हुए यह आलोचना निम्नलिखित प्रकार की हो सकती है :

(i) हेडलाइन मुद्रास्फीति के रूप में थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआइ) के प्रयोग में त्रुटि दिखती है क्योंकि यह तैयार

माल की उस कीमत को शामिल नहीं करता जो उपभोक्ता वस्तुतः बाजार में देखते हैं। रिज़र्व बैंक को उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) से अधिक निर्देशित होना चाहिए जो माँग-जन्य दबाव को सही-सही प्रतिबिंबित करता है क्योंकि यह माँग-जन्य दबाव होता है जिसे मौद्रिक नीति प्रभावित कर सकती है।

- (ii) माँग-जन्य दबाव के लिए प्रॉक्सी के रूप में खाद्येतर विनिर्माण मुद्रास्फीति के रिज़र्व बैंक के निर्वचन में त्रुटि है क्योंकि यह माँग-पक्ष दबावों की तुलना में अधिक आपूर्ति-पक्ष कीमत समायोजन तथा लागत-वृद्धि कारकों को प्रतिबिंबित करता है।

22. प्रारंभ में, मैं यह स्वीकार करना चाहूँगा कि इस आलोचना में कुछ दम है। वैचारिक रूप से डब्ल्यूपीआई की तुलना में सीपीआई माँग-पक्ष दबावों का बेहतर संकेतक होता है। यदि थोक मूल्य में बढ़ोतरी बनी रहती है तो इसके परिणामस्वरूप या तो खुदरा व्यापारियों द्वारा कीमतें बढ़ा दी जाती हैं या उनके मार्जिन में कमी आती है। यदि माँग मजबूत हुई तो खुदरा व्यापारी अपनी कीमत-निर्धारण शक्ति का प्रयोग कर सकते हैं और थोक मूल्य में वृद्धि का भार उपभोक्ताओं पर डाल सकते हैं। यदि माँग कमजोर हुई तो खुदरा व्यापारी मजबूर होकर थोक मूल्य में वृद्धि का आंशिक अवशोषण अपने मार्जिन में कर सकते हैं। इस प्रकार इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि उपभोक्ता कीमतें माँग-पक्ष दबाव को थोक कीमतों की अपेक्षा बेहतर ढंग से प्रतिबिंबित करती हैं।

23. इतने पर भी, भारत में हमने अनेक कारणों से दूसरे सर्वोत्तम विकल्प के रूप में डब्ल्यूपीआई को सीपीआई पर तरजीह दी है। पहला और सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि हमारे पास कोई एकल सीपीआई नहीं है जो पूरे देश में सर्वत्र मौजूद हो। अभी हाल तक हमारे पास चार सीपीआई थीं और उनमें से इस समय हमारे पास तीन सीपीआई हैं जो आबादी के भिन्न-भिन्न खंडों का प्रतिनिधित्व करती हैं। जबकि डब्ल्यूपीआई की गणना अखिल भारतीय आधार पर की जाती है, सीपीआई का निर्माण विनिर्दिष्ट केंद्रों के लिए किया जाता है और तब इसे अखिल भारतीय सूचकांक में जोड़ दिया जाता है। दूसरा, डब्ल्यूपीआई सीपीआई की तुलना में कुछ कम अंतराल पर उपलब्ध होता है। तीसरा, पण्यों की संख्या, कोटेशनों की संख्या, कृषेतर उत्पादों को शामिल किये जाने और व्यापारयोग्य वस्तुओं के संदर्भ में सीपीआई की तुलना में डब्ल्यूपीआई की व्याप्ति अधिक है।

24. अंत में, सीपीआई शृंखला के विविध समूह का संशोधन डब्ल्यूपीआई शृंखला से पीछे रहता है। पिछले वर्ष डब्ल्यूपीआई शृंखला का संशोधन करते हुए उसका आधार वर्ष 2004-05 किया गया जबकि मौजूदा सीपीआई शृंखला का आधार वर्ष पुराना ही है - सीपीआई-आरएल के लिए (1986-87), सीपीआई-एल (1986-87) और

सीपीआई-आईडब्ल्यू (2001) जो सीपीआई शृंखला को अर्थव्यवस्था में द्रुत गति से हो रहे संरचनात्मक परिवर्तन द्वारा परिलक्षित कीमत-प्रवृत्ति को शामिल करने के लिए साधन रहित छोड़ देती है। डब्ल्यूपीआई के मामले में आधार वर्ष के संशोधन ने भी ईंधन तथा बिजली और विनिर्मित उत्पादों के भारांक में वृद्धि कर दी जो प्राथमिक वस्तुओं से हट कर था। यद्यपि विनिर्मित उत्पादों के भारांकों में परिवर्तन पूरे समूह के लिए पर्याप्त नहीं था फिर भी खाद्येतर विनिर्मित उत्पादों के भारांकों में कुछ झुकाव आया जो दस वर्षों में उत्पादन पैटर्न में परिवर्तन को प्रतिबिंबित करता है। नयी डब्ल्यूपीआई शृंखला में शामिल किये गये पण्यों की संख्या 435 से बढ़ कर 676 हो गयी जबकि पुरानी शृंखला से 176 मदों को निकाला गया /संशोधित किया गया था।

25. खाद्य पदार्थ एवं ईंधन मुद्रास्फीति के संबंध में मौद्रिक नीति की सीमित प्रभावकारिता को देखते हुए और कोर सीपीआई मुद्रास्फीति का उपयोग करने की सीमा को देखते हुए हमने अर्थव्यवस्था में माँग-पक्ष दबाव के संकेतक के रूप में खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। सामान्यतः कोर मुद्रास्फीति हेडलाइन से व्युत्पन्न मुद्रास्फीति माप होता है। हेडलाइन के अस्थायी घटक, खाद्यान्न और ईंधन, को छोड़ दिया जाता है। यह एक मानक प्रथा है यद्यपि बहिष्करण की अनेक सांख्यिकीय पद्धतियाँ होती हैं। संक्षेप में कहा जाये तो कोर मुद्रास्फीति की डिजाइन इस प्रकार बनायी जाती है कि वह मुद्रास्फीति के स्थायी घटक को शामिल कर सके जो नीति के अधीन होती है। जबकि यह सच है कि पण्य कीमतें डब्ल्यूपीआई के खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद अवयव को प्रभावित करती हैं, उसी प्रकार यह भी सच है कि उच्चतर पण्य कीमतों का डब्ल्यूपीआई में अंतरण अर्थव्यवस्था में अंतर्निहित माँग-जन्य स्थिति पर महत्वपूर्ण रूप से निर्भर करता है।

26. आइए, अब मैं उन बातों को दुहराऊँ जिन्हें अनेक अवसरों पर इससे पहले भी हमने कहा है। रिज़र्व बैंक में मुद्रास्फीति की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए हम मुद्रास्फीति के सभी मापों को देखते हैं, इसके समग्र और भिन्न-भिन्न घटकों, दोनों को अन्य आर्थिक एवं वित्तीय संकेतकों के साथ मिला कर। मौद्रिक नीति के निर्माण के संदर्भ में यह महत्वपूर्ण होता है कि राष्ट्रीय स्तर पर मुद्रास्फीति की एक मजबूत प्राथमिक माप हो। इस दिशा में सीएसओ द्वारा सीपीआई (शहरी), सीपीआई (ग्रामीण) और देश के लिए सीपीआई का संकलन और प्रसारण किया जाना अगला महत्वपूर्ण कदम होता है। तथापि, दीर्घ कालमान श्रेणी आँकड़े, विशेष रूप से पिछली अवधि के, इन नये सूचकांकों के लिए उपलब्ध नहीं होते हैं जिसके चलते उन्हें नीति-विश्लेषण के लिए उपयुक्त नहीं पाया जाता है। यह भी आवश्यक है कि कीमत सूचकांकों को सेवा-कीमतों की उपयुक्त व्याप्ति के साथ बढ़ाया जाये ताकि उनके समग्र प्रतिनिधित्व में सुधार हो। इसके अतिरिक्त, कीमत-सूचकांकों के लिए आधार वर्ष को नियमित और बारंबार अद्यतन किया

जाना भी महत्वपूर्ण होता है ताकि उनमें अर्थव्यवस्था में आया संरचनात्मक परिवर्तन प्रतिबिंबित हो और उनका प्रतिनिधित्व बढ़े ।

27. आँकड़ा-निर्वचन मौद्रिक नीति से इतर क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण होता है । संकट-पश्चात् बासेल ।।। पैकेज का एक महत्वपूर्ण बिलडिंग ब्लॉक है व्यापार-चक्र में तेजी के दौरान प्रतिचक्रिय प्रतिरोधकों में वृद्धि करना और उनका उपयोग व्यापार चक्र में गिरावट के दौरान करना । इसका अभिप्राय यह है कि हमें व्यापार चक्र में निर्धारित समय पर एक मोड़-बिन्दु के बारे में निर्णय लेने में सक्षम होना है । स्पष्ट रूप से समयपूर्व कार्रवाई या विलंबित कार्रवाई समष्टिआर्थिक संदर्भ में महँगी सिद्ध हो सकती है । प्रतिचक्रिय प्रतिरोधकों को स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि हम व्यापार चक्र विश्लेषण के लिए अपना कौशल बढ़ायें जो एक बार फिर कालमान श्रेणी विश्लेषण पर आधारित होता है - जो इस सम्मेलन के दो केंद्रीय पक्षों में से एक है ।

आँकड़ा अंतराल

28. अब मैं इस शीर्षक के अंतर्गत कुछ ऐसे क्षेत्रों पर ध्यान दूँगा जहाँ हमें सांख्यिकीय माप में सुधार करना है ।

संभाव्य आउटपुट

29. पहले, हमें अर्थव्यवस्था के संभाव्य आउटपुट के एक अधिक विश्वसनीय माप की आवश्यकता होगी । जैसाकि हम सभी जानते हैं, संभाव्य आउटपुट वह अधिकतम आउटपुट होता है जिसे अर्थव्यवस्था में रुझान / औसत मुद्रास्फीति दर पर दबाव दिये बिना उत्पन्न किया जा सकता है । जब अर्थव्यवस्था संभाव्य स्तर पर कार्य कर रही होती है तब अर्थव्यवस्था में सकल माँग और आपूर्ति की स्थिति संतुलित होती है जिससे मुद्रास्फीति दीर्घावधि प्रत्याशित मूल्य की ओर अभिमुख होती है । इसलिए संभाव्य आउटपुट का माप न केवल आउटपुट आँकड़ों की प्राप्ति के लिए महत्वपूर्ण होता है बल्कि अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति के गति सिद्धांत का मूल्यांकन करने के लिए भी महत्वपूर्ण होता है । संभाव्य आउटपुट का माप रोजगार और मजदूरी के संबंध में विश्वसनीय आँकड़ों पर निर्भर करता है । मैंने इसके पूर्व आँकड़ों की गुणवत्ता पर बोलते हुए इन दोनों सांख्यिकी पर टिप्पणी की है । मुझे यह नोट करते हुए हर्ष हो रहा है कि राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग और सरकारी सांख्यिकीय एजेंसियाँ रोजगार और मजदूरी संबंधी दोनों प्रकार के आँकड़ों की गुणवत्ता में सुधार करने के काम में लगी हैं । ऐसा होता है तो हम भविष्य में अर्थव्यवस्था का सांख्यिकीय रूप से अधिक मजबूत संभाव्य आउटपुट माप देखेंगे और वह मुद्रास्फीति की हमारी निगरानी की स्थिति में सुधार करेगा ।

30. वैश्विक वित्तीय संकट के ठीक बाद प्रमुख उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में वृद्धि दरें आउटपुट अंतराल के बावजूद सुस्त रही हैं । वित्तीय संकट

की पिछली घटनाओं के अनुभव से ज्ञात होता है कि वृद्धि और निवेश दरें विशिष्ट रूप से संकट-पूर्व स्तर से नीचे रहती हैं । इसी प्रकार के गति सिद्धांत हमें हाल के वित्तीय संकट के ठीक बाद देखने को मिलते हैं । ऐसा बोध होता है कि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की संभाव्य वृद्धि दरें उनकी संकट-पूर्व स्थिति से नीचे रह सकती हैं । यदि ऐसा होता है तो बढ़ते व्यापार एवं वित्तीय वैश्वीकरण को देखते हुए तेजी से आगे बढ़ने वाली उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की संभाव्य वृद्धि दरें संकट-पूर्व स्थिति से नीचे रह सकती हैं । इस पृष्ठभूमि में, न्यून एवं स्थिर मुद्रास्फीति के लक्ष्य के समनुरूप भारत की संभाव्य वृद्धि दर का पुनर्मूल्यांकन करना हमारे लिए लाभदायक होगा ।

सेवा-क्षेत्र उत्पादन एवं मूल्य सूचकांक

31. भारतीय अर्थव्यवस्था का एक सुस्पष्ट लक्षण इसमें सेवा-क्षेत्र के एक बड़े हिस्से का होना है जो प्रति व्यक्ति आय के इस स्तर पर अनेखा है । हमारे वृद्धि एवं मुद्रास्फीति संबंधी गति सिद्धांत का मूल्यांकन करने के लिए हमें सेवा-क्षेत्र उत्पादन एवं कीमतों के बारे में विश्वसनीय संकेतकों की आवश्यकता होगी । यह स्वीकार करना होगा कि सेवा-क्षेत्र का उत्पादन परंपरागत औद्योगिक क्षेत्र से कम मूर्त होता है और यह सेवा-क्षेत्र के उत्पादन एवं कीमत स्तर के मापने को बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण बना देता है । मैं समझता हूँ कि हमारी सरकारी सांख्यिकीय एजेंसियाँ इस चुनौती पर ध्यान दे रही हैं । उनसे मेरा अनुरोध है कि वे अपने प्रयास में तेजी लायें ।

वित्तीय स्थिरता

32. संकट-पश्चात् अवधि में वित्तीय स्थिरता का मुद्दा उभर कर केंद्र-स्थान पर चला आया है । जहाँ तक अब हम जानते हैं, मूल्य-स्थिरता और समष्टिआर्थिक स्थिरता वित्तीय स्थिरता की गारंटी नहीं देते हैं और वित्तीय स्थिरता का अनुश्रवण करने के लिए हमें अतिरिक्त माप प्रणाली को विकसित करने की आवश्यकता है । वित्तीय सुदृढ़ता संकेतकों के संबंध में आइएमएफ द्वारा की गयी पहल में इसके लिए एक मॉडल दिया गया है । इसकी 'मॉनिटरिंग ग्रिड' चार प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करती है जिनमें से पहला है वित्तीय बाजार की निगरानी । बाजार में असंतुलनों या आघातों से उत्पन्न जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए हमें आस्ति-मुल्यों के संबंध में और प्रारंभिक चेतावनी संकेतकों के संबंध में भी आँकड़ों की आवश्यकता होती है । आइएमएफ ग्रिड में ध्यान दिया जाने वाला दूसरा क्षेत्र मैक्रो-पूडेंशियल सर्विलांस होता है जो वित्तीय क्षेत्र पर पड़ने वाले आघातों के प्रभाव में संकेद्रित होता है । तीसरे क्षेत्र में समष्टि वित्तीय सहबद्धता शामिल होती है, विशेष रूप से ऋण-प्रसार, निजी क्षेत्र को ऋण और अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के लिए तुलनपत्र आँकड़े शामिल होते हैं । ध्यान केंद्रित किये जाने वाला चौथा क्षेत्र है समष्टिआर्थिक स्थितियों की निगरानी का ।

33. आइएनएफ ढाँचे को अपनाये जाने की शुष्कात करने के लिए हमें यह देखना होगा कि हमारे पास क्या आँकड़े हैं और उनकी गुणवत्ता क्या है। तात्कालिक रूप से मैं यह कह सकता हूँ कि हमें स्थावर संपदा, पूँजी-प्रवाह से संबंधित अपने आँकड़ों और आँकड़ा-विश्लेषण कौशल को तथा बैंकों और गैर-बैंकों के संदर्भ में ऋण, चलनिधि एवं बाजार जोखिम संकेतकों को उन्नत बनाने की आवश्यकता है।

समापन

34. अब मैं अपने वक्तव्य का समापन करना चाहता हूँ। सारांश रूप में कहा जाये तो मैंने आपके समक्ष रिज़र्व बैंक के नीति-निर्माण की

गुणवत्ता को कायम रखने के लिए अंक संकलन और सांख्यिकीय विश्लेषण के महत्व को प्रतिपादित किया है तथा उन क्षेत्रों पर जहाँ हमें आँकड़ों की गुणवत्ता में सुधार करने की आवश्यकता है, उन क्षेत्रों पर जहाँ आँकड़ों का बेहतर ढंग से निर्वचन करने की आवश्यकता है और उन क्षेत्रों पर जहाँ हमें नयी सीमाओं का अन्वेषण करने की आवश्यकता है विशेष जोर दिया है। मेरे विषय-प्रतिपादन का आशय किसी भी प्रकार से इसे व्यापक बनाना नहीं है लेकिन मैं आशा करता हूँ कि यह रिज़र्व बैंक द्वारा एक संस्था के रूप में सांख्यिकीय विश्लेषण को महत्व दिये जाने को सूचित करेगा।

35. मैं इस सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूँ।